अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2023) दिनांक : 20.12.2023

समय सीमा : 3 घंटा पंचम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

संजया–25

प्र. 1 कोई पांच द्वार लिखें– 10

(क) यथाख्यात चारित्र–परिणाम द्वार।

(ख) छेदोपस्थापनीय–अंतर द्वार।

(ग) सामायिक चारित्र–आकर्ष द्वार।

(घ) परिहार विशुद्धि–स्थिति द्वार।

(ङ) सूक्ष्म संपराय–प्रव्रज्या द्वार।

(च) सूक्ष्म संपराय–काल द्वार।

(छ) परिहार विशुद्धि–गति स्थिति, पदवी द्वार।

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 6

(क) कल्पातीत किस गुणस्थान से होते हैं?

(ख) परिहार विशुद्धि से सामायिक तथा छेदोपस्थापनीय की शुद्धि अनंत गुण अधिक क्यों बताई गई है?

(ग) सूक्ष्म संपराय में आयुष्य व मोह का बंध क्यों छोड़ा गया है?

(घ) कम से कम कितनी अवस्था वाला साधु परिहार विशुद्धि चारित्र ग्रहण कर सकता है?

(ङ) महाविदेह में कौन-कौन से चारित्र पाए जाते हैं?

(च) परिहार विशुद्धि चारित्र वाले आठवें देवलोक से आगे क्यों नहीं जाते?

(छ) छठे गुणस्थान में कितने प्रकार के निर्ग्रंथ होते हैं?

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) यदि पांच व छह कर्मों की उदीरणा हो तो किन-किन कर्मों की उदीरणा होती है? तथा किन गुणस्थान में किस समय होती है?

(ख) पांचों चारित्र में संख्या की दृष्टि से अल्प बहुत का क्या क्रम है?

(ग) सामायिक, छेदोपस्थापनीय और परिहार विशुद्धि परस्पर षटस्थान पतित अनंतगुणहीन, अनंतगुण अधिक से क्या तात्पर्य है?

(घ) अनेक जीवों की अपेक्षा छेदोपस्थापनीय चारित्र की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति कितनी है तथा किस अपेक्षा से बताई गई है?

नियंठा–25

प्र. 4 कोई छह द्वार लिखें– 18

(क) पुलाक–प्रव्रज्या द्वार।

(ख) कषाय कुशील–कर्म उदीरणा द्वार।

(ग) बकुश–अंतर द्वार।

(घ) निर्ग्रंथ–काल द्वार।

(ङ) प्रतिसेवना–आकर्ष द्वार।

(च) स्नातक–परिणाम व स्थिति द्वार।

(छ) कषाय कुशील–उपसंदूहान द्वार।

प्र. 5 किन्हीं सात प्रश्नों के उत्तर लिखें– 7

(क) दो कर्म की उदीरणा कौन से गुणस्थान में होती है?

(ख) कषाय कुशील का वेद द्वार लिखें।

(ग) 'अकर्मी' शब्द का क्या तात्पर्य है?

(घ) प्रतिसेवना के उत्कृष्ट पर्यव किससे अनंतगुण अधिक हैं?

(ङ) अनेक जीवों की अपेक्षा छहों निर्ग्रंथ में कौन से निर्ग्रंथ सदाकाल रहेंगे।

(च) समस्त साधुओं में पुलाक तथा प्रतिसेवना की संख्या कितनी मिलती है?

(छ) प्रतिसेवना के कितने कल्प लिए गए हैं?

(ज) अचरम समय का निर्ग्रंथ से क्या तात्पर्य है?

गीतिका-नियंठा दिग्दर्शन–10

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) निर्ग्रंथ के कितने कर्म क्षीण होते हैं?

(ख) पुलाक, बकुश, प्रतिसेवना व कषायकुशील किस प्रकार के चावलों को भांति होते हैं?

(ग) भगवान ने किसे मिथ्यात्वी कहा है, यह किस सूत्र में आता है?

प्र. 7 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें– 8

(क) सूत्र तणी.....रोय।

(ख) हय रूपी.....जोय।

(ग) कषाय कुशील.....छ होय।

(घ) नवी दीख्या.....सोय।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–40

प्र. 8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) पच्चीस बोल–अंक 23 का भांगा 2

अथवा

गुणस्थान सात से बारह।

(ख) चतुर्भंगी–आश्रव के भेद 3

अथवा

अठारहवां बोल।

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–बीसवां बोल 3

अथवा

जीव के भेद छह से लेकर ग्यारह तक।

(घ) तत्त्वचर्चा–छह द्रव्यों पर चोर साहूकार। 3

अथवा

कर्म पर छह द्रव्य, नौ तत्त्व।

(ङ) कर्म प्रकृति–दर्शन मोह की प्रकृतियों का कार्य। 4

अथवा

आयुष्य कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति।

(च) जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड)–द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव गुण द्वार-आश्रव व निर्जरा का वर्णन करें। 4

अथवा

निर्जरा के भेद अर्थ सहित लिखें।

(छ) प्रतिक्रमण–कर्मादान सम्बन्धी अतिचार 3

अथवा

सम्यक्त्व के भूषण व दर्शन के अतिचार।

(ज) जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खण्ड) निश्चय नय व व्यवहार नय को परिभाषित करते हुए प्रमेय व निक्षेप का भी वर्णन करें। 4

अथवा

उद्दिष्टवर्जक व कायोत्सर्ग प्रतिमा का वर्णन करें।

(झ) इक्कीस द्वार–विभंगज्ञानी 4

अथवा

अनाहारक में पूरा बोल लिखें।

(ञ) बावन बोल–संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा? 3

अथवा

उदय के 33 बोलों में कौन-कौन आत्मा?

(ट) लघु दण्डक–दृष्टि द्वार–सात नारकी से प्रारंभ कर अंत तक लिखें। 4

अथवा

उत्पत्ति द्वार–संवर से प्रारंभ कर पृथ्वीकाय अपकाय तक लिखें।

(ठ) पांच ज्ञान–मतिज्ञान श्रुतज्ञान के भेद। 3

अथवा

अनंतर सिद्ध केवलज्ञान के प्रथम छह प्रकारों का वर्णन करें।